International Journal of Engineering Research & Management Technology
(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal) ISSN: 2348-4039
Volume 13, Issue-1 January-February- 2026 Impact Factor: 7.09
Email: editor@ijermt.org www.ijermt.org

कामकाजी तथा गैर–कामकाजी महिलाओं के बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य तथा सामाजिक रहन सहन का एक अध्ययन

डॉ0 सत्येंद्र सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर
शिक्षाशास्त्र विभाग
राजकीय महाविद्यालय मांट, मथुरा
SSchahar11@gmail.com

सारांश, वर्तमान समाज में महिलाओं की भूमिका, खासकर शहरी क्षेत्रों में, बहुत बदल गई है। महिलाएं पहले सिर्फ परिवार और बच्चों की देखभाल करती थीं, लेकिन अब वे शिक्षा और नौकरी में भी सक्रिय रूप से भाग लेती हैं। यह बदलाव परिवारिक संरचना, बच्चों की परवरिश और सामाजिक–आर्थिक परिदृश्य पर उसका प्रभाव स्पष्ट है। जब हम कामकाजी महिलाओं की बात करते हैं, तो इसमें मुख्य रूप से वे महिलाएं शामिल होती हैं जो घर के बाहर काम करती हैं। दूसरी ओर, गैर–कामकाजी महिलाएं घरेलू काम करती हैं और बच्चों की देखभाल को अपनी पहली जिम्मेदारी मानती हैं। इस मामले में, कामकाजी और गैर–कामकाजी महिलाओं के बच्चों के सामाजिक कौशल और मानसिक स्वास्थ्य में स्पष्ट अंतर देखा जा सकता है। इस अध्ययन का लक्ष्य यही है कि किस प्रकार कामकाजी और गैर–कामकाजी महिलाओं के बच्चों में मानसिक और सामाजिक कौशल में अंतर है। भारत जैसे देश में, जहाँ पारंपरिक दृष्टिकोण अभी भी मजबूत हैं, महिलाओं का कार्यक्षेत्र में योगदान एक महत्वपूर्ण विषय बन गया है और इसके बच्चो की शिक्षा पर पडने वाले प्रभावों का अध्ययन करना इस शोध का आवश्यक बिन्दु है। भारतीय महिलाएं किस प्रकार अब धीरे–धीरे अपनी पारंपरिक भूमिका से बाहर निकल रही हैं और उन क्षेत्रों में प्रवेश कर रही हैं जहां पुरुषों का वर्चस्व रहता था। जिस कारण महिलाओं की स्थिति और भूमिका में काफी बदलाव देखा गया है। महिलाओं की अपनी रूढ़िवादी भूमिका के बारे में धारणाएं बदल रही हैं जैसे–जैसे अधिक महिलाएं शिक्षित हो रही हैं और अपने अधिकारों और लाभों का उपयोग करने में अधिक स्वतंत्र भी हो रही हैं। उनके बढ़े हुए सामाजिक–पारिवारिक दायित्वों का एक और परिणाम उनकी शिक्षा और कार्यस्थल पर भागीदारी है। घर से बाहर काम करने वाली महिलाओं को कई सामाजिक–पारिवारिक परिवर्तनों का सामना करना पडाता है, जिस कारण महिलाओं में तनाव और चिंता भी बढ़ रही है।

मुख्य शब्द, कामकाजी महिला, परिवारिक संरचना, बच्चें, सामाज आदि।

परिचय, महिलाओं का तनाव, खासकर कामकाजी महिलाओं के लिए, सामाजिक और भावनात्मक परिवर्तन प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण घटक स्पष्ट आज दिखाई दे रहा है। दुनिया मे आज महिलाओं के पास अब अधिक विकल्प हैं, और उनमे से अधिकांश घर से बाहर काम करना शुरू कर रही हैं। महिलाएँ सांस्कृतिक मूल्यों और मानदंडों के अधीन आज भी हैं, इसलिए कामकाजी महिलाओं को ऐसा करते समय अपने परिवार के लोगों की उम्मीदों के अनुरूप ढलना चाहिए। इसके परिणामस्वरूप, कामकाजी महिलाएं कई प्रकार का तनाव और दबाव सहती भी हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने महिलाओं के स्वास्थ्य को पूर्ण शारीरिक, मानसिक और सामाजिक कल्याण, और केवल बीमारी या दुर्बलता का अभाव बताया है।

परिवार की देखभाल करने वाली कामकाजी महिलाओं के सामने आने वाली प्रमुख चुनौतियाँ



चित्र संख्या 1.1

संयुक्त राज्य अमेरिका में, यह अनुमान लगाया गया है कि लगभग तीन में से एक कामकाजी महिला परिवार की देखभाल करने वाली भी है। इन महिलाओं को काम करने और अपने प्रियजनों की देखभाल करने की दोहरी भूमिका को संभालने में अनोखी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। जबकि महिलाएँ कई भूमिकाएँ निभाती हैं, इतनी सारी महत्वपूर्ण जिम्मेदारियों का संचयी प्रभाव महिलाओं के समग्र कल्याण पर गहरा असर डालता है। इन चुनौतियों को पहचानना और उनका समाधान करना कामकाजी महिलाओं के कल्याण के लिए जरूरी है, जो परिवार की देखभाल भी करती हैं। करियर की जिम्मेदारियाँ कामकाजी महिलाओं की कार्यस्थल पर अपनी जिम्मेदारियाँ और माँगें होती हैं। इनमें समय–सीमा को पूरा करना, बैठकों में भाग लेना, परियोजनाओं को संभालना और अपने करियर में आगे बढ़ना शामिल हो सकता है। कई महिलाएँ नेतृत्व की भूमिकाएँ निभाती हैं, जिसके साथ अक्सर अतिरिक्त जिम्मेदारियाँ और लंबे कामकाजी घंटे भी आते हैं और परिवार की देखभाल इसी के साथ अपने प्रियजनों, जैसे कि बच्चों, वृद्ध माता–पिता या विकलांग परिवार के सदस्यों की शारीरिक और भावनात्मक भलाई के लिए जिम्मेदार भी होते हैं।[1] महिलाओं के देखभाल संबंधी कार्यों में

इनको नहलाना, खिलाना, दवा प्रबंधन, परिवहन और भावनात्मक समर्थन सहित कई तरह की गतिविधियाँ शामिल रहती हैं। अपने काम और देखभाल की भूमिकाओं के अलावा, महिलाएं अक्सर घरेलू कामों और अपनी जिम्मेदारियों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा भी निभाती हैं, जैसे खाना पकाना, सफाई करना और वित्त का प्रबंधन करना। एक चुनौतीपूर्ण करियर और देखभाल संबंधी जिम्मेदारियों को एक साथ निभाने से तनाव, चिंता और भावनात्मक थकावट का उच्च स्तर महिलाओं में मिलता दिख रहा है। महिलाओं को अपने परिवार को उतना समय न दे पाने या देखभाल संबंधी जरूरतों को पूरा करने के लिए काम से समय न निकाल पाने के लिए अपराध बोध हो सकता है। देखभाल करने की शारीरिक मांगें, जैसे कि उठाना या गतिशीलता में सहायता करना, देखभाल करने वाले के स्वास्थ्य पर बुरा असर डाल सकता हैं, जिससे संभावित रूप से पीठ की समस्या या अन्य शारीरिक समस्याएं साफ हो सकती हैं। महिलाओं की देखभाल की जिम्मेदारियों के कारण नींद की कमी से भी थकान और उससे जुड़े स्वास्थ्य संबंधी समस्याए हो सकती हैं।

महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव, काम और देखभाल के बीच निरंतर संतुलन बनाए रखने से मानसिक स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियाँ पैदा हो रही हैं, जिनमें अवसाद और बर्नआउट शामिल हैं। यह अलग–थलग करने वाला हो सकता है, क्योंकि महिलाओं को लग सकता है कि उनके पास सामाजिक गतिविधियों या खुद की देखभाल के लिए बहुत कम समय मिल पाता है। महिलाओं के रिश्तों पर प्रभाव, दोहरी जिम्मेदारी की दुविधा पति–पत्नी या पार्टनर के साथ रिश्तों में तनाव भी पैदा कर सकता है, साथ ही बच्चों के साथ भी, जो अपनी माँ के व्यस्त कार्यक्रम के कारण उपेक्षित महसूस करते हैं। महिलाओं को अपने देखभाल कर्तव्यों और अपनी इच्छाओं और आकांक्षाओं के बीच संघर्ष का अनुभव हो सकता है। महिलाओं के कार्य–जीवन संतुलन के लिए संघर्ष,कामकाजी महिलाएँ जो परिवार की देखभाल करती हैं, महिलाओं को बहुत ही कम अवसर व बहुत कम खाली समय मिलता है। काम, देखभाल और घरेलू जिम्मेदारियों की माँगों के बीच, उन्हें अपने लिए समय निकालने में संघर्ष करना पड़ सकता है। आराम और खुद की देखभाल के लिए समय की कमी से तनाव और बर्नआउट बढ़ता है। महिलाओं के लचीलेपन की चुनौतियाँ, काम–जीवन संतुलन बनाए रखना उन महिलाओं के लिए विशेष रूप से चुनौतीपूर्ण हो सकता है, जो अनम्य घंटों या व्यस्त कार्य शेड्यूल वाले व्यवसायों में महिलाऐ काम करती हैं। और परिवार की देखभाल करने के लिए अक्सर लचीलेपन की आवश्यकता होती है, क्योंकि आपातकालीन और अप्रत्याशित परिस्थितियाँ कभी भी उत्पन्न हो सकती हैं, जिससे सख्त कार्य शेड्यूल का पालन करना मुश्किल हो जाता है। महिलाओं द्वारा देखभाल की जिम्मेदारियों को उनके करियर की आकांक्षाओं के साथ संतुलित करना मुश्किल फैसलों की ओर ले जा सकता है। कुछ महिलाओं को करियर से जुड़े त्याग करने पड़ सकते हैं, जैसे कि पदोन्नति ठुकराना या अपने काम के घंटे कम करना। इन त्यागों का उनकी कमाई की क्षमता और करियर की दिशा पर दीर्घकालिक प्रभाव पड़ सकता है।

शोध पूर्व सहित्यक अवलोकन

इस शोध पत्र के लिए अब तक सम्बन्धित साहित्य के शोध अध्ययन के अन्तर्गत कामकाजी तथा गैर–कामकाजी महिलाओं के बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य तथा सामाजिक कौशल का तुलनात्मक अध्ययन को लिया है। सम्बन्धित साहित्य इस प्रकार है।

अकरम, जावेद. अल. (2024) इस शोध के निष्कर्ष के रूप में पाया है, कि घर संभालने और बच्चों का पालन–पोषण करने के अलावा, महिलाएं हाल ही में अपने करियर में भी सक्रिय रूप से शामिल हुई हैं। जो महिलाएं काम करती हैं और जो काम नहीं करतीं, उनके भावनात्मक और शारीरिक स्वास्थ्य की तुलना करें। कामकाजी और गैर–कामकाजी महिलाओं, साथ ही उनके बच्चों की सामाजिक–जनसांख्यिकीय स्थिति और स्वास्थ्य का पूर्वव्यापी और तुलनात्मक विश्लेषण अध्ययन का उद्देश्य था। अध्ययन में 25 से 45 वर्ष की उम्र की उन माताओं को शामिल किया गया जो नौकरीपेशा थीं या नहीं और जिनके पास आय के अलग–अलग स्रोत थे। उनके बच्चों की उम्र दो से अठारह वर्ष के बीच थी। अस्थि घनत्व, बॉडी मास इंडेक्स, हीमोग्लोबिन, कैल्शियम का स्तर और सामाजिक आर्थिक स्थिति (जैसा कि कुप्पुस्वामी के पैमाने द्वारा मापा गया) जांच के तहत स्वास्थ्य पैरामीटर थे। डेटा का विश्लेषण करने के लिए SPSS संस्करण 25.0 का उपयोग किया गया था।

फतमावती, एट अल. (2024) इस शोध के निष्कर्ष के रूप में पाया है, कि एक बच्चे का सामाजिक विकास इस बात को प्रभावित करता है कि वे अपने पर्यावरण के साथ कैसे बातचीत करते हैंय कुछ बच्चे सामाजिक बंधन बनाने और अपने परिवेश के अनुकूल ढलने के लिए संघर्ष करते हैं। कामकाजी और गैर–कामकाजी माताओं के पूर्वस्कूली आयु वर्ग के बच्चों के सामाजिक विकास की तुलना करना इस अध्ययन का उद्देश्य था। इस क्रॉस–सेक्शनल अध्ययन में, पूर्वस्कूली उम्र के बच्चों (उम्र 4–6) वाली 113 माताओं ने विश्लेषणात्मक टिप्पणियों में भाग लिया। डीडीएसटी II प्रश्नावली शीट का उपयोग सामाजिक और व्यक्तिगत विकास के विशेष पहलुओं पर डेटा इकट्ठा करने के लिए किया गया था। कामकाजी महिलाओं से अपेक्षा की जाती है कि वे अपने समय का प्रबंधन करने, अपने बच्चों को सलाह देने और उनके विकास की निगरानी करने में सक्षम हों, और अपने बच्चों को स्वायत्तता और विश्वास दें ताकि उन्हें उम्र के अनुरूप विकासात्मक गतिविधियों में उनकी मदद की आवश्यकता न पड़े।

महालक्ष्मी, बी. एट. अल. (2024), इस शोध के निष्कर्ष के रूप में पाया है, कि तनाव, जो लैटिन शब्द स्ट्रिंगर्स से आया है, विभिन्न मांगों और दबावों के प्रति शरीर की प्रतिक्रिया है, और इसका लोगों के स्वास्थ्य और कल्याण पर प्रभाव पड़ता है। मात्रात्मक गैर–प्रयोगात्मक तुलनात्मक अध्ययन पद्धति के हिस्से के रूप में संरचित प्रश्नावली का उपयोग करके, विसनगर, गुजरात में 120 महिलाओं से डेटा एकत्र किया गया था। परिणाम परीक्षण–पूर्व आकलन में, जो महिलाएं नियोजित नहीं थीं, उनमें नियोजित महिलाओं की तुलना में तनाव का स्तर कम था। अध्ययन में ग्रामीण विसनगर में कामकाजी और बेरोजगार महिलाओं के बीच तनाव के स्तर में महत्वपूर्ण अंतर को उजागर किया गया है।

मिश्रा, आर.एस.एम. (2023), इस शोध के निष्कर्ष के रूप में पाया है, कि वर्तमान अध्ययन का लक्ष्य यह पता लगाना है कि क्या विवाहित महिलाएं जो काम करती हैं और जो संयुक्त परिवारों में नहीं हैं, उनमें आशा, जीवन संतुष्टि और आत्म–सम्मान के विभिन्न स्तर हैं। नमूने में 144 कामकाजी और गैर–कामकाजी पति–पत्नी विवाहित महिलाएं थीं जो संयुक्त परिवारों में रहती थीं। उनकी आयु 24 से 55 वर्ष के बीच थी। इसमें शहरी और ग्रामीण दोनों प्रतिभागी थे।

शोध विधि

कामकाजी तथा गैर–कामकाजी महिलाओं के बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य तथा सामाजिक रहन सहन का तुलनात्मक अध्ययन इस अध्ययन में कामकाजी तथा गैर–कामकाजी महिलाओं के बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक कौशल की तुलना करने के लिए एक **सर्वेक्षणात्मक पद्धति** (survey method) अपनाई गई है। यह पद्धति विशेष रूप से विभिन्न समूहों के बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक कौशल के स्तरों को समझने और उनकी तुलना करने के लिए उपयुक्त ही रहती है।

शोध डिजाइन इस अध्ययन की शोध विधि के मुख्य घटक निम्नलिखित हैं, कामकाजी तथा गैर–कामकाजी महिलाओं के बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य तथा सामाजिक कौशल का तुलनात्मक अध्ययन यह अध्ययन एक तुलनात्मक शोध डिजाइन पर आधारित रहेगा, जिसमें कामकाजी और गैर–कामकाजी माताओं के बच्चों के बीच सामाजिक कौशल और मानसिक स्वास्थ्य के कई पहलुओं का विश्लेषण किया गया है। यह शोध डिजाइन समूहों में असमानताओं और समानताओं का मूल्यांकन करने में सहायक होगा।

अनुसंधान के प्रश्न

1 क्या कामकाजी महिलाओं के बच्चों का मानसिक स्वास्थ्य गैर–कामकाजी महिलाओं से अलग है।
2 क्या कामकाजी महिलाओं के बच्चों में गैर–कामकाजी महिलाओं के बच्चो की तुलना में अधिक सामाजिक कौशल होते हैं।

अनुसंधान के उद्देश्य

इस शोध अध्ययन को पूरा करने के लिए शोधार्थिनी द्वारा निम्नलिखित शोध अध्ययनों का निर्माण किया गया है, जो इस प्रकार है।

1 कामकाजी महिलाओं के बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन करना।
2 गैर–कामकाजी महिलाओं के बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन करना।

शोध प्रश्न / परिकल्पना

1 कामकाजी तथा गैर–कामकाजी महिलाओं के बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य की तुलना का अध्ययन करना।

2 कामकाजी/ गैर–कामकाजी महिलाओं के लड़कों एवं लड़कियों के सामाजिक कौशल में महत्वपूर्ण अंतर पाया जाता है।

समस्या कथन

कामकाजी तथा गैर–कामकाजी महिलाओं के बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य तथा सामाजिक रहन सहन का एक अध्ययन

कामकाजी महिलाओं के प्रभाव की चुनौतियाँ,

आधुनिक समाज में महिलाओं का कार्यक्षेत्र में बढ़ता योगदान न केवल आर्थिक और सामाजिक प्रगति का प्रतीक है, बल्कि यह परिवार और समाज में लैंगिक समानता को बढ़ावा देने का एक माध्यम भी है। हालांकि, कामकाजी महिलाओं के योगदान के साथ–साथ उनके सामने अनेक चुनौतियाँ भी खड़ी होती हैं। ये चुनौतियाँ व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, और व्यावसायिक स्तर पर उनकी भूमिका और जिम्मेदारियों को जटिल बनाती हैं। कामकाजी महिलाओं को पारंपरिक घरेलू जिम्मेदारियों और पेशेवर जीवन के बीच संतुलन बनाना पड़ता है। कई बार यह संतुलन उनके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। इसके अलावा, लैंगिक असमानता, सामाजिक दबाव, कार्यस्थल पर भेदभाव, और समर्थन की कमी जैसी समस्याएँ भी उनके लिए चुनौतियाँ उत्पन्न करती हैं। इन चुनौतियों को समझना और उनके समाधान की दिशा में प्रयास करना, महिलाओं को कार्यक्षेत्र में प्रभावशाली और आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

1 पारिवारिक जिम्मेदारियाँ और कार्य–जीवन संतुलन कामकाजी महिलाओं को अक्सर परिवार की देखभाल, बच्चों की परवरिश, और घरेलू कार्यों की जिम्मेदारी निभानी पड़ती है। इसके साथ–साथ पेशेवर जीवन में अपेक्षाएँ और दबाव उनके लिए दोहरी जिम्मेदारियाँ पैदा करते हैं।

2 समय प्रबंधन की कठिनाई घरेलू और पेशेवर कार्यों को समय पर पूरा करना एक चुनौती है।

3 देखभाल बच्चों की परवरिश के लिए समय की कमी महसूस होती है, जिससे भावनात्मक तनाव बढ़ सकता है।

4 कार्यस्थल पर लैंगिक असमानता कई कामकाजी महिलाओं को वेतन में असमानता, पदोन्नति में भेदभाव, और नेतृत्व भूमिकाओं में सीमित अवसरों जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

निष्कर्ष, महिलाओं द्वारा काम और देखभाल के बीच लगातार तालमेल बिठाने से क्रोनिक तनाव और अंततः बर्ना आउट भी हो सकता है। यह उनके पेशेवर और व्यक्तिगत जीवन दोनों पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है। बर्नआउट के परिणाम स्वरूप महिलाओं की नौकरी के प्रदर्शन में कमी, अनुपस्थिति और परिवार के सदस्यों के साथ तनावपूर्ण संबंध हो सकते हैं। महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव, कार्य–जीवन संतुलन प्राप्त करने का संघर्ष मानसिक स्वास्थ्य चुनौतियों में योगदान दे सकता है, जिसमें चिंता और अवसाद शामिल रहते है। कामकाजी महिला देखभाल के साथ अपनी दोहरी भूमिकाओं की निरंतर मांगों से अभिभूत महसूस कर सकती हैं। इस स्थिति में कई महिलाएँ अपराध बोध का अनुभव करती हैं, काम पर अपनी जिम्मेदारियों और देखभाल करने के अपने कर्तव्यों के बीच उलझन को महसूस

करती हैं। अपनी लगातार एक भूमिका को दूसरे पर प्राथमिकता देने का भावनात्मक बोझ थका देने वाला भी हो सकता है। कामकाजी महिला देखभाल के अत्यधिक काम करने, अपनी आवश्यकताओं की उपेक्षा करने, या तनाव के संकेतों को नजरअंदाज करने जैसे तरीकों का सहारा ले सकती हैं, जो आगे चलकर समस्या को और बढ़ा सकते हैं। यह स्वीकार करना महत्वपूर्ण है कि परिवार की देखभाल करने वाली महिला होने के साथ–साथ कार्य–जीवन संतुलन प्राप्त करना एक जटिल और निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। इस स्थिति में महिलाओं को अक्सर रचनात्मक समाधान विकसित करने, अपने नियोक्ताओं और सामुदायिक संसाधनों से सहायता लेने और इन चुनौतियों से सफलता पूर्वक निपटने के लिए स्वयं की देखभाल को प्राथमिकता देने की आवश्यकता होती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- श्रीवास्तव, डॉ. यश्मिता आनंद धीरज झा (2024), कामकाजी एवं गैर कामकाजी माताओं के किशोरों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन, जय माँ सरस्वती ज्ञानदायिनीः एक अंतर्राष्ट्रीय बहु–विषयक ई–जर्नल, वॉल्यूम 6/2, पृष्ठ संख्या 13
- निकोरे एम.,(2020), वेयर आर इंडिया जवर्किंग वूमेन, इरेटिनल इकोनॉमिक्स, लाइफ स्टाइल, द टाइम्स ऑफ इंडिया पृष्ठ संख्या 345
- डंडोना, ए, (2016), कार्यरत माताओं और गृहणियों के बच्चों की उपलब्धि प्रेरणा इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन साइकोलॉजी, खंड 3, अंक 3, संख्या– 3, पृष्ठ 83
- डंडोना, ए.(2016), नौकरी पेशा माताओं और गृहणियों के बच्चों की उपलब्धि प्रेरणाद्यद इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन साइकोलॉजी, खंड 3,अंक 3,संख्या 3, पी.पी 831
- अरोड़ा आर.(2016), गैर–कामकाजी और कामकाजी माताओं के किशोरों के व्यक्तित्व लक्षण इंपीरियल जर्नल ऑफ इंटरडिसिप्लिनरी रिसर्च (आईजेआईआर) खंड–2 पृष्ठ 23
- अरोड़ा आर.,(2016), गैर कामकाजी और कामकाजी माताओं के किशोरों के व्यक्तित्व लक्षण, इंपीरियल जर्नल ऑफ इंटर डिसीप्लिनरी रिसर्च (यू जे आई आर) वॉल्यूम – 2/4, पी.पी 23
- सिंह,ए ,किरण, यू–वी. (2014), किशोरों के व्यक्तित्व पर माताओं की कामकाजी स्थिति का प्रभाव– उन्नत वैज्ञानिक और तकनीकी अनुसंधान का अंतरराष्ट्रीय जर्नल, 1 पृष्ठ 86